श्रवण क्षतियुक्त बालक (Hearing Impaired Child)

श्रवण क्षतियुक्त बालक का वर्गीकरण और परिभाषाएं-

श्रवण दोष वाले बच्चों का वर्गीकरण इस तरह से किया जा सकता है।

1-भाषा ज्ञान से पूर्व बहरापन

2-भाषा ज्ञान के बाद बहरापन

3-श्रवण विकलांग

4-ऊंचा सुनने वाले

बहरा बालक-ऐसा बालक जिसने जीवन के शुरुआती 2 या 3 सालों में श्रवण शक्ति खो दी हो तथा इसके परिणाम स्वरूप जिसने स्वाभाविक रूप से भाषा अर्जित ना की हो वह बहरा समझा जाता है।

अमेरिकी विद्यालय द्वारा स्वीकृत परिभाषा-"बहरे बालक वे हैं जिनमें श्रवण संवेदना जीवन के सामान्य कार्यों के लिए निष्क्रिय रहता है।"

अब पुनः बहरे बालकों को दो तरह से वर्गीकृत किया जा सकता है।

1-भाषा ज्ञान से पूर्व बहरापन

2-भाषा ज्ञान के पश्चात बहरापन

श्रवण विकलांग बालकों के प्रकार

1-पूर्ण बधिर बालक

2-आंशिक रूप से बधिर बालक

चिकित्सा आधार पर बालक निम्न वर्गों में बटे हैं।

मंद बालक-20-30db

सीमांत बालक-20-30db

मध्यम बालक-40-60db

तीव्र बालक-60-75db

दूरबोध बालक -75 से ज्यादा

श्रवण दोष युक्त बालकों के लक्षण-

1-अध्यापकों द्वारा कहे गए वाक्यों को बार-बार दोहराने के लिए कहना।

2-हाथ को कानों के पीछे लगाकर सुनने की कोशिश करना।

3-अनुशासनहीनता

4-भाषा योग्यता का विकास देर में

5-कक्षा की गतिविधियों में भाग लेने पर हिचकिचाहट दिखाना।

6-मौखिक निर्देशों का कोई पालन नहीं क्योंकि उसे सुनने में ही नहीं आता।

7-उच्चारण का दोषपूर्ण होना

श्रवण क्षतियुक्तता के कारण -

1-जन्म के समय के कारण

*जन्म के पूर्व के कारण

*जन्म के बाद के कारण

2-अनुवांशिक कारण

*गैर अनुवांशिक कारण

3-मनोवैज्ञानिक कारण

*दैहिक कारण

4-जन्मजात कारण

*अर्जित कारण

श्रवण दोष वाले बालकों की समस्याएं-

1-भाषा संबंधी समस्या

2-सामाजिक समायोजन की समस्या

3-व्यक्तिगत विकास में बाधा

अन्य समस्याएं

4-आसामान्य संवेगात्मक व्यवहार

5-मनोवैज्ञानिक समस्याएं

6-सामान्य से कम शिक्षा उपलब्धि

श्रवण दोष वाले बालकों की शिक्षा व्यवस्था-

1-संप्रेषण तकनीकी

2-शिक्षण तकनीकी

3-श्रवण क्षक्ति युक्त बालको के बालकों की शैक्षिक सुविधाएं

4-प्रतिगमन

5-प्रथक विद्यालय

6-शिशु प्रोग्राम

अध्यापकों की भूमिका-

1-अध्यापक किसी भी नए शब्द को मौखिक रूप से भी बताएं और बोर्ड पर भी लिखा दे।

2-बोलते समय अध्यापक अपनी आवाज ऊंची रखें।

3-अध्यापक अपनी कक्षा के अंदर और बाहर के वातावरण को शांत रखें

4-अध्यापक जल्दी-जल्दी बोलने से बचें

5-टहल टहल कर ना बोले एक जगह खड़ा होकर बोले ।

6-सामान्य बच्चों से इन बच्चों की तुलना अध्यापक कभी ना करें

7-कक्षा के दूसरे छात्रों को प्रेरित करें कि वह ऐसे विद्यार्थियों से मेलजोल बढ़ाए।

अभिभावकों की भूमिका-

1-बोलने का ज्यादा से ज्यादा अवसर देकर

2-श्रवण यंत्र उपलब्ध करवा कर

3-साफ और धीरे-धीरे बोलने का निर्णय या निर्देश देकर

4-कान की संरचना और क्रियाविधि की जांच करा कर